कंचना कुमारी
अतिथि शिक्षक, हिन्दी
यू. आर. कॉलेज, रोसड़ा

मुक्तिबोध : समाज – बोध

मुक्तिबोध भयानक खबरों के कवि माने जाते हैं। चूँकि कवि को उन खबरों का पता है इसलिए वह उन पर हँसता नहीं। वह अपने आस-पास की घटनाओं की गहन छानबीन करता है। इस व्यवस्था में "हर आदमी उचक कर चढ़ जाना चाहता है। हर एक को अपनी-अपनी पड़ी है... इस रेल-पेल में सब लोग कहीं जा रहे हैं लेकिन कोई कहीं नहीं जा रहा है" कवि इस व्यवस्था को क्रान्तिकारी विधि से बदलना चाहता है।

"चाँद का मुँह टेढ़ा है" की रचनाओं में बिम्ब बड़े ही जटिल है और प्रतिक भी बड़े बीहड़ है।

मुक्तिबोध जी ने अपने चतुर्दिक फैली पूँजीवादी व्यवस्था का अत्याचार, शोषण हताश, भ्रष्टाचार, आतंक मूल्यहीनता और उपभोक्तवाद आदि को देखा। मुक्तिबोध ने अपने बाहर उपस्थित इस विडम्बना और पीड़ा को अनुभव किया तथा आभ्यंतरित किया। उनकी कविता इसी प्रक्रिया की उपज है। कवि अपना एक पक्ष है - जनता का शोषित, पीड़ित जनता का। वह मध्यवर्गीय आत्मग्रस्तता से निकलना चाहता है

(2) जिसमें उस समय के सभी प्रतिनिधि तथा तमाम बुद्धिजीवी वर्ग पीड़ित था।
'अंधेरे में' नामक कविता में अंधकार के विरुद्ध प्रकाश का संघर्ष है। कवि अपने ही अन्तर्विरोध को पहचानना चाहता है। उसे ड्यारने जुलूस का सामना करना पड़ता है। उस जुलूस का जो संगीन नोकों का चमकता जंगल है इसमें कर्नल, ब्रिगेडियर, विचारक, आलोचक, कवि शहर का कुख्यात दयारा डोमा जी उस्ताद भी है डोमा उस्ताद के साथ आलोचकों, विचारकों का दोस्ताना है - इस बुद्धिजीवी वर्ग से उसको कोई आशा नहीं -

"बौद्धिक जगत है कीतदास
किराए के विचारों का उदगास"।

इस दशा में जनता की शक्ति ही एकमात्र आशा है। वे मार्क्सवादी विचार-धारा से प्रतिबद्ध कवि है। वे मानते है कि समाज और मानव का उद्धार तब तक नहीं हो सकता। जब तक कि शोषण और आतंक में पिसती हुई जनता पूँजीवादी और साम्राज्यवादी शक्तियों के विरुद्ध एकजुट होकर क्रांति के लिए तैयार न होकर जाए।
द्वितीय विश्वयुद्ध में पूँजीवादी साम्राज्यवादी शक्तियों ने आतंक मौत भय का जो खेल-खेला

Scanned with CamScanner

(3) मुक्तिबोध जी ने एक कविता मे उतारे है।

"साम्राज्यवादियो के पदशक्ला चेहरे
एटमी धुएं के बादलो से गहरे
क्षितिज पर छाए है
जापान को ध्वस्त कर
ईरान को मार कर
इजिप्त के खाले के लिए है उतावले
अरब के खाले के लिए है बावले"॥